की तृप्ति के अतिरिक्त किसी अन्य सुख की कल्पना भी न करे। सीधे कृष्णभावनामृत का अभ्यास करने से यह स्थिति अनायास हो जाती है।

यतो यतो निश्चलति मनश्चञ्चलमस्थिरम्।
ततस्ततो नियम्यैतदात्मन्येव वशं नयेत्।।२६।।

यतः यतः=जिस-जिस कारण से; **निश्चलति**=विचलित हो; **मनः**=चित्त; **चञ्चलम्**=चञ्चल; **अस्थिरम्**=चलायमान; **ततः ततः**=वहाँ-वहाँ से; **नियम्य**=वश में कर; **एतत्**=इसे; **आत्मनि**=आत्मा के; **एव**=ही; **वशम्**=वश में; **नयेत्**=करे।

अनुवाद

चञ्चल और अस्थिर मन जहाँ-जहाँ भी विषयों में भटके, वहाँ-वहाँ से खींचकर इसे फिर आत्मा के ही वश में स्थापित करे।।२६।।

तात्पर्य

मन स्वभाव से अति चंचल और अस्थिर है। परन्तु आत्मज्ञानी योगी के लिए इसका संयम करना अनिवार्य है; उस पर मन का अधिकार होना ठीक नहीं। मन और इन्द्रियों को वश में करने वाला 'गोस्वामी' अथवा 'स्वामी' कहलाता है, जबकि मन के आधीन रहने वाला गोदास (इन्द्रियों का सेवक) है। गोस्वामी को विषयसुख की तुच्छता भलीभाँति पता रहती है। उसकी इन्द्रियाँ पूर्ण रूप से चिन्मय इन्द्रिय-रसानन्द में, इन्द्रियों के अधीश्वर हृषीकेश भगवान् श्रीकृष्ण की सेवा में नियोजित हैं। विशुद्ध इन्द्रियों से श्रीकृष्ण का सेवन करने का नाम ही कृष्णभावनामृत है। इन्द्रियों को पूर्ण रूप से वश में करने का यह एकमात्र साधन है। इससे अधिक, योग के अभ्यास की परम सिद्धि भी यही है।

प्रशान्तमनसं ह्येनं योगिनं सुखमुत्तमम्।
उपैति शान्तरजसं ब्रह्मभूतमकल्मषम्।।२७।।

प्रशान्तमनसम्=श्रीकृष्ण के चरणारविन्द में जिसका चित्त इस प्रकार केन्द्रित है; **हि**=निःसन्देह; **एनम्**=यह; **योगिनम्**=योगी; **सुखम्**=सुख; **उत्तमम्**=परमोच्च; **उपैति**=प्राप्त करता है; **शान्तरजसम्**=जिसका रजोगुण शान्त हो गया है; **ब्रह्मभूतम्**=जो ब्रह्मभूत होकर मुक्त हो गया है; **अकल्मषम्**=जो पाप से रहित है।

अनुवाद

मुझ में एकाग्र मन वाले योगी को निःसन्देह परम सुख की उपलब्धि होती है। वह ब्रह्मभूत होकर मुक्तिलाभ करता है; उसका चित्त शान्त रहता है, रजोगुण समाप्त हो जाता है और सम्पूर्ण पापकर्म निवृत्त हो जाते हैं।।२७।।

तात्पर्य

विषयवासना से मुक्त होकर दिव्य भगवद्भक्तियोग में स्थिर होना 'ब्रह्मभूत